ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218
PP. No.- 114-117
ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-16, No.- III, Issues-29, YEAR- July-Sept.-2023

दलित एवं महादलित जाति के वृद्ध महिलाओं का अभिवृत्यात्मक विश्लेषण (एक समाजशास्त्रीय अध्ययन)

डॉ० रेखा कुमारी
असिस्टेंट प्रोफेसर– समाजशास्त्र विभाग, रामलखन सिंह यादव कॉलेज, राँची, कोकर (झारखण्ड), भारत

Received-06.08.2023, Revised-12.08.2023, Accepted-18.08.2023 E-mail: akbar786ali888@gmail.com

***सारांशः** वृद्धावस्था के प्रति प्रतिकूल अभिवृत्तियाँ पीढ़ी–दर–पीढ़ी चलती आ रही हैं, जिन्हें व्यक्ति बाल्यावस्था में विकसित करता है। जिन परिवारों में वृद्धों के साथ जैसा व्यवहार बच्चें देखते हैं बड़े होकर वे हूबहू वैसा व्यवहार करते हैं। घर में रहने वाली वृद्ध महिलाएँ ज्यादातर अपनी भूमिका के प्रति परेशान रहती हैं। घर के कार्यों में नियन्त्रण, प्रभुत्व, निर्णय लेने का दायित्व जैसे महत्वपूर्ण भूमिका से उन्हें परिवार के सदस्य अलग कर देते हैं तथा सलाह देते हैं कि आराम से रहे, भजन–पूजन करें, घूमे–फिरे, शांति से जीवन यापन करो। सीमित आय, ढलता हुआ शरीर तथा सामाजिक सम्पर्क का अभाव उनकी भूमिका की अहमियत को कमजोर बना देता है। ऐसी स्थिति में उनका सुखी, सम्माननीय व आदरपूर्वक जीवन जीना कठिन हो जाता है।*

कुंजीभूत शब्द– दलित एवं महादलित जाति, प्रतिकूल अभिवृत्तियाँ, बाल्यावस्था, जीवन यापन, सामाजिक सम्पर्क, दायित्व।

व्यक्ति का जीवन कभी भी स्थिर नहीं है बल्कि लगातार परिवर्तित होता रहता है। पूर्व में यह परिवर्तन व्यक्ति की शारीरिक संरचना, कार्य प्रणाली में परिपक्वता को लाता है, जबकि बाद के जीवन में यह परिवर्तन बाल्यकाल की तरफ प्रतिगमन करता हुआ होता है। जिसका प्रभाव उसकी अभिवृत्तियों पर पड़ता है।

अध्ययन क्षेत्र– प्रस्तुत अध्ययन के लिए गया जिला के कुजापि मुहल्ला का चयन किया गया है।

निदर्शन– कुजापि मुहल्ला से 50 दलित एवं महादलित वृद्ध महिलाओं का चयन उद्देश्यपूर्ण निदर्शन पद्धति से किया गया है।

प्रविधि– प्राथमिक तथ्यों का संकलन करने के लिए साक्षात्कार अनुसूची प्रविधि का उपयोग किया गया है।

अध्ययन का उद्देश्य– प्रस्तुत अध्ययन के निम्नलिखित उद्देश्य हैं :

(1) दलित एवं महादलित वृद्ध महिलाओं द्वारा समाचार पत्र पढ़ने की जानकारी प्राप्त करना।
(2) दलित एवं महादलित वृद्ध महिलाएं टी०वी० देखती है या नहीं, इस बात की जानकारी प्राप्त करना।
(3) उत्तरदात्रियाँ साधु सन्तों में विश्वास करती हैं या नहीं, इस बात का अध्ययन करना।
(4) उत्तरदात्रियाँ जादू टोना में विश्वास करती हैं या नहीं, इस बात की जानकारी प्राप्त करना।
(5) उत्तरदात्रियाँ गोष्ठियों एवं कल्बों में जाती है या नहीं, इस बात को ज्ञात करना।
(6) उत्तरदात्रियाँ धार्मिक सत्संग में जाती है या नहीं, इसकी जानकारी प्राप्त करना।
(7) उत्तरदात्रियाँ धार्मिक पुस्तक पढ़ती है या नहीं, इस बात को स्पष्ट करना।
(8) उत्तरदात्रियाँ तीर्थ यात्रा की है या नहीं, इस बात पर प्रकाश डालना।
(9) उत्तरदात्रियाँ धुम्रपान करती है या नहीं, इस बात को रेखांकित करना।
(10) विधवा विवाह के प्रति उत्तरदात्रियों के दृष्टिकोण का अध्ययन करना।

उत्तरदात्रियों से वृद्ध महिलाओं का अभिवृत्यात्मक विश्लेषण से सम्बन्धित दृष्टिकोण प्राप्त किया गया, प्राप्त जानकारी को निम्न सारणियों में दर्शाया गया है : समाचार–पत्र पढ़ना

उत्तरदात्रियों से यह जानकारी प्राप्त की गयी कि क्या आप समाचार–पत्र पढ़ती व सुनती हैं, प्राप्त जानकारी को निम्नलिखित सारणी में दर्शाया गया है :

सारणी संख्या –1

समाचार–पत्र पढ़ना व सुनना के प्रति उत्तरदायित्व का दृष्टिकोण

दृष्टिकोण	आवृत्ति	प्रतिशत
हाँ	05	10.00
नहीं	45	90.00
योग	50	100.00

सारणी के अवलोकन से यह स्पष्ट होता है कि अध्ययन में सम्मिलित 10.00 प्रतिशत उत्तरदात्रियों के अनुसार वे समाचार पत्र पढ़ती हैं तथा 90.00 प्रतिशत उत्तरदात्रियों के अनुसार वे समाचार पत्र कभी नहीं पढ़ती हैं।
अतः स्पष्ट है कि अध्ययन में सम्मिलित अधिकांश (90.00 प्रतिशत) उत्तरदात्रियों के अनुसार, वे कभी समाचार पत्र नहीं पढ़ती हैं।

टी०वी० देखना– उत्तरदात्रियों से यह जानकारी प्राप्त की गयी कि क्या आप टी०वी० देखती है, प्राप्त जानकारी को निम्नलिखित सारणी में दर्शाया गया है :

सारणी संख्या –2

टी.वी. देखने के प्रति उत्तरदात्रियों का दृष्टिकोण

दृष्टिकोण	आवृत्ति	प्रतिशत
हाँ	20	40.00
नहीं	30	60.00
योग	50	100.00

अनुरूपी लेखक/संयुक्त लेखक

सारणी के अवलोकन से यह स्पष्ट होता है कि अध्ययन में सम्मिलित 40.00 प्रतिशत उत्तरदात्रियों के अनुसार, वे टी.वी. देखती हैं तथा मात्र 60.00 प्रतिशत ऐसी उत्तरदात्रियाँ हैं जो टी. वी. नहीं देखती हैं।
अतः स्पष्ट है कि अध्ययन में सम्मिलित अधिकांश (60.00 प्रतिशत) उत्तरदात्रियों के अनुसार, वे टी.वी. देखती है।

साधु–सन्तों में विश्वास करना– उत्तरदात्रियों से यह जानकारी प्राप्त की गयी कि क्या आप साधु–सन्तों में विश्वास करती हैं, प्राप्त जानकारी को निम्नलिखित सारणी में दर्शाया गया है :

सारणी संख्या –3

साधु-सन्तों में विश्वास करने के प्रति उत्तरदात्रियों का दृष्टिकोण

दृष्टिकोण	आवृत्ति	प्रतिशत
हाँ	35	70.0
नहीं	15	30.0
योग	50	100.0

सारणी के अवलोकन से यह स्पष्ट होता है कि अध्ययन में सम्मिलित 70.0 प्रतिशत उत्तरदात्रियों के अनुसार, वे साधु–सन्तों में विश्वास करती हैं तथा 30.0 प्रतिशत हैं उत्तरदात्रियों के अनुसार, वे साधु–सन्तों में विश्वास नहीं करती हैं।
अतः स्पष्ट है कि अध्ययन में सम्मिलित अधिकांश (70.0 प्रतिशत) उत्तरदात्रियों के अनुसार, वे साधु–सन्तों में विश्वास करती हैं।

जादू–टोना में विश्वास करना– उत्तरदात्रियों से यह जानकारी प्राप्त की गयी कि क्या आप जादू–टोना में विश्वास करती हैं, प्राप्त जानकारी को निम्नलिखित सारणी में दर्शाया गया है :

सारणी संख्या –4

जादू-टोना में विश्वास करने के प्रति उत्तरदात्रियों का दृष्टिकोण

दृष्टिकोण	आवृत्ति	प्रतिशत
हाँ	36	72.0
नहीं	14	28.0
योग	50	100.0

सारणी के अवलोकन से यह स्पष्ट होता है कि अध्ययन में सम्मिलित 72.0 प्रतिशत उत्तरदात्रियों के अनुसार, वे जादू–टोना में विश्वास करती हैं तथा 28.0 प्रतिशत उत्तरदात्रियों के अनुसार, वे जादू–टोना में विश्वास नहीं करती हैं।
अतः स्पष्ट है कि अध्ययन में सम्मिलित अधिकांश (72.0 प्रतिशत) उत्तरदात्रियों के अनुसार, वे जादू–टोना में विश्वास करती हैं।

गोष्ठियों एवं क्लबों में जाना– उत्तरदात्रियों से यह जानकारी प्राप्त की गयी कि क्या आप गोष्ठियों एवं क्लबों में जाती हैं, प्राप्त जानकारी को निम्नलिखित सारणी में दर्शाया गया है :

सारणी संख्या –5

गोष्ठियों एवं क्लबों में जाने के प्रति उत्तरदात्रियों का दृष्टिकोण

दृष्टिकोण	आवृत्ति	प्रतिशत
हाँ	01	02.0
नहीं	49	98.0
योग	50	100.0

सारणी के अवलोकन से यह स्पष्ट होता है कि अध्ययन में सम्मिलित 98.0 प्रतिशत उत्तरदात्रियों के अनुसार, वे गोष्ठियों एवं क्लबों में नहीं जाती हैं तथा मात्र 2.0 प्रतिशत ऐसी उत्तरदात्रियाँ है, जो गोष्ठियों एवं क्लबों में जाती हैं।
अतः स्पष्ट है कि अध्ययन में सम्मिलित अधिकांश (98.0 प्रतिशत) उत्तरदात्रियों के अनुसार, वे गोष्ठियों एवं क्लबों में नहीं जाती हैं ।

धार्मिक सत्संग– उत्तरदात्रियों से यह जानकारी प्राप्त की गयी कि क्या आप धार्मिक सत्संग में जाती हैं, प्राप्त जानकारी को निम्नलिखित सारणी में दर्शाया गया है :

सारणी संख्या –6

धार्मिक सत्संग में जाने के प्रति उत्तरदात्रियों का दृष्टिकोण

दृष्टिकोण	आवृत्ति	प्रतिशत
हाँ	48	96.0
नहीं	02	04.0
योग	50	100.0

सारणी के अवलोकन से यह स्पष्ट होता है कि अध्ययन में सम्मिलित 96.0 प्रतिशत उत्तरदात्रियों के अनुसार, वे धार्मिक सत्संग में जाती हैं तथा मात्र 04.0 प्रतिशत ऐसी उत्तरदात्रियाँ हैं जो धार्मिक सत्संग में नहीं जाती हैं।

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-16, No.- III, Issues-29, YEAR- July-Sept.-2023

अतः स्पष्ट है कि अध्ययन में सम्मिलित अधिकांश (96.0 प्रतिशत) उत्तरदात्रियों अनुसार, वे धार्मिक सत्संग में जाती हैं।

धार्मिक पुस्तकें– उत्तरदात्रियों से यह जानकारी प्राप्त की गयी कि क्या आप धार्मिक पुस्तकें पढ़ती/सुनती हैं, प्राप्त जानकारी को निम्नलिखित सारणी में दर्शाया गया है :

सारणी संख्या –7

धार्मिक पुस्तकें पढ़ने / सुनने के प्रति उत्तरदात्रियों का दृष्टिकोण

दृष्टिकोण	आवृत्ति	प्रतिशत
हाँ	10	20.0
नहीं	40	80.0
योग	50	100.0

सारणी के अवलोकन से यह स्पष्ट होता है कि अध्ययन में सम्मिलित 20.0 प्रतिशत उत्तरदात्रियों के अनुसार, वे धार्मिक पुस्तकें पढ़ती/सुनती हैं तथा 80.0 प्रतिशत उत्तरदात्रियों के अनुसार वे धार्मिक पुस्तकें नहीं पढ़ती/सुनती हैं।

अतः स्पष्ट है कि अध्ययन में सम्मिलित अधिकांश (80.0 प्रतिशत) उत्तरदात्रियों के अनुसार, वे धार्मिक पुस्तकें पढ़ती/सुनती हैं।

तीर्थ यात्रा– उत्तरदात्रियों से यह जानकारी प्राप्त की गयी कि क्या आपने तीर्थ यात्रा की है, प्राप्त जानकारी को निम्नलिखित सारणी में दर्शाया गया है :

सारणी संख्या –8

तीर्थ यात्रा करने के प्रति उत्तरदा ात्रियों का दृष्टिकोण

दृष्टिकोण	आवृत्ति	प्रतिशत
हाँ	30	60.0
नहीं	20	40.0
योग	50	100.0

सारणी के अवलोकन से यह स्पष्ट होता है कि अध्ययन में सम्मिलित 60.0 प्रतिशत उत्तरदात्रियों के अनुसार, उन्होंने तीर्थ यात्रा की है तथा 40.0 प्रतिशत उत्तरदात्रियों के अनुसार, उन्होंने तीर्थ यात्रा नहीं की है।

अतः स्पष्ट है कि अध्ययन में सम्मिलित अधिकांश (60.0 प्रतिशत) उत्तरदात्रियों के अनुसार, उन्होंने तीर्थ यात्रा की है।

धूम्रपान– उत्तरदात्रियों से यह जानकारी प्राप्त की गयी कि क्या आप धूम्रपान करती हैं, प्राप्त जानकारी को निम्नलिखित सारणी में दर्शाया गया है :

सारणी संख्या –9

धूम्रपान करने के प्रति उत्तरदात्रियों का दृष्टिकोण

दृष्टिकोण	आवृत्ति	प्रतिशत
हाँ	32	64.0
नहीं	18	36.0
योग	50	100.0

सारणी के अवलोकन से यह स्पष्ट होता है कि अध्ययन में सम्मिलित 64.0 प्रतिशत उत्तरदात्रियों के अनुसार, वे धूम्रपान करती हैं तथा 36.00 प्रतिशत उत्तरदात्रियों के अनुसार, वे धूम्रपान नहीं करती हैं ।

अतः स्पष्ट है कि अध्ययन में सम्मिलित अधिकांश (64.0 प्रतिशत) उत्तरदात्रियों के अनुसार, वे धूम्रपान करती हैं ।

विधवा विवाह– उत्तरदात्रियों से यह जानकारी प्राप्त की गयी कि क्या आप विधवा विवाह को उचित मानती हैं, प्राप्त जानकारी को निम्नलिखित सारणी में दर्शाया गया है :

सारणी संख्या –10

विधवा विवाह को उचित मानने के प्रति उत्तरदात्रियों का दृष्टिकोण

दृष्टिकोण	आवृत्ति	प्रतिशत
हाँ	35	70.0
नहीं	15	30.0
योग	50	100.0

सारणी के अवलोकन से यह स्पष्ट होता है कि अध्ययन में सम्मिलित 70.0 प्रतिशत उत्तरदात्रियों के अनुसार, वे विधवा विवाह को उचित मानती हैं तथा 30.0 प्रतिशत उत्तरदात्रियों के अनुसार, वे विधवा विवाह को उचित नहीं मानती हैं ।

अतः स्पष्ट है कि अध्ययन में सम्मिलित अधिकांश (70.0 प्रतिशत) उत्तरदात्रियों के अनुसार, वे विधवा विवाह को उचित नहीं मानती हैं ।

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-16, No.- III, Issues-29, YEAR- July-Sept.-2023

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. Alam, R. and Husain (1977) : Psycho-Social Problem of Aging: Indian Perspective in M.G. Husain (Ed.) : Changing Indian Society Status of Aged, New Delhi, Manak Publication Pvt. Ltd.
2. Ananntharaman, R.N. (1976) : "Psychology of Againg - A Study in Adjestment:, Unpublished Ph.D. thesis, Bangloare University.
3. Bhatnagar, G.S. and M. Randhawa (1987) : "Social Adjustment Among Retired Persons", In Sharma M.L. and Dak, T.M. (Eds.) : Againg in India Challange for the Society, Delhi Ajanta Publishers.
4. Gurumurthy, K.G. (1998) : The Aged in India, New Delhi, Reliance Publishing House.
5. Hemalatha, Pandsurganarayana, M. (1984) : "Study of the aged in Rural & Urban setting", Paper pre sented at the 2nd National Conference on Againg of the A.I. Timpati.

*****